1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

सुशील राज आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
द्वारा
संघ लोक सेवा आयोग की
सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा
आवेदन की अंतिम तिथि – 30 जून 2025
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

वर्ष 48, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 जून, 2025 से रविवार 8 जून, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई – अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

42वाँ वैचारिक क्रान्ति एवं बालवाड़ी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर समापन समारोह

10 दिवसीय शिविर में 9 राज्यों के सैकड़ों वनवासी युवा कार्यकर्ताओं ने लिया वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार प्रसार का संकल्प

मानव निर्माण हेतु और अधिक मात्रा में शिविरों का आयोजन करे–आर्य समाज –आचार्य देवव्रत

ऋषि ऋण चुकाना है – आर्य राष्ट्र बनाना है – सुरेन्द्र कुमार आर्य

भाषा–बोली और भोजन की विविधता में एकता का दीप जला रहा है आर्य समाज – अनिल गुप्ता

आर्यसमाज के अधिकारी, आर्य नेताओं, राजनेताओं और वैदिक विद्वानों ने दिया वनवासी युवा शक्ति को आशीर्वाद और शुभकामनाएं

वैचारिक रुप से मजबूत होकर कल्याण की राह पर अग्रसर होंगे – वनवासी शिवरार्थी – विजेन्द्र गुप्ता, अध्यक्ष, दिल्ली विधान सभा

सूदूर वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा के साथ संस्कार देना आर्य समाज का सराहनीय कार्य – आशीष सूद, गृह एवं शिक्षा मन्त्री, दिल्ली सरकार

वैदिक ज्ञानधारा के अनुसार मानव मात्र सुख पूर्वक जीवनयापन करे, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को अपनाए, अपने जीवन के मुख्य उद्देश्य, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करे, इसके लिए आर्य समाज निरंतर जन जाग्रति के लिए वैचारिक क्रांति का प्रवाह चलाता आ रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ पिछले 50 से अधिक वर्षों से देश के उन हिस्सों में जहां आज विश्व की चौथी अर्थ व्यवस्था होने के बावजूद और 21वीं शताब्दी की ओर अग्रसर भारत में वहां के वनवासी भाई–बहन जी जीवन की मूलभूत सुविधाओं के अभाव में, शिक्षा संस्कारों के बिना जंगली जीवन जीने को मजबूर थे, ऐसे सूदूर क्षेत्रों में जिसे तथाकथित शिक्षित लोग आदिवासी क्षेत्र कहते हैं, वहां गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, स्कूल, छात्रावासों के अलावा वालवाड़ी (लघु शिक्षा केंद्र) और स्किल डेवलपमेंट के कार्यक्रम चलाकर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अहम भूमिका निभाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

अ. भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा आयोजित 42वें वैचारिक क्रान्ति शिविर के समापन समारोह में मंचस्थ आचार्य देवव्रत जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, श्री विजेन्द्र गुप्ता जी, श्री योगराज अरोड़ा जी, श्री आशीष सूद जी, श्री राजकुमार गुप्ता जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सतीश चड्डा जी, श्री सुरेन्द्र रैली जी, श्रीमती राज सचदेवा जी, श्री जोगेन्द्र खट्टर एवं श्री विनय आर्य जी । (नीचे) इस अवसर पर नौ राज्यों से पधारे आर्य वनवासी कार्यकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृति प्रस्तुति एवं नाटिका मंचन के प्रेरक दृश्य

– शेष पृष्ठ 3-4 एवं 7 पर

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर द्वारा
जम्मू-कश्मीर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन : 19-20 जुलाई, 2025
स्थान : बाबा जित्तो सभागार, शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, चट्ठा, जम्मू
निवेदक
नरेन्द्र त्रेहन प्रधान, 9419182941
राजीव सेठी मन्त्री, 9419182553
योगेश गुप्ता कोषाध्यक्ष, 7006579919
आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

देववाणी-संस्कृत

आत्मजीवन निर्माण

वेद-स्वाध्याय

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्यइवाजनि।।
-ऋ 8। 6। 10 ; साम॰ पू॰ 2।2।6। 8; अथर्व॰ 20।11।1
ऋषिः-काण्वो वत्सः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ- **अहम् इत्** = मैंने तो **हि** = निश्चय से **पितुः** पालक पिता **ऋतस्य** = सत्यस्वरूप परमेश्वर की **मेधाम्** = धारणावती बुद्धि को **परिजग्रभ** = सब ओर से ग्रहण कर लिया है, अतः **अहम्** = मैं **सूर्यः इव** = सूर्य के समान **अजनि** = हो गया हूँ।

विनय- मैं सूर्य के सदृश हो गया हूँ। मैं अनुभव करता हूँ कि मैं मनुष्यों में सूर्य बन गया हूँ। मुझ सूर्य से सत्यज्ञान की किरणें सब ओर निकल रही हैं। जैसे इस हमारे सूर्य से प्राणिमात्र को ताप, प्रकाश और प्राण मिल रहा है, सबका पालन हो रहा है, इसी प्रकार मैं भी ऐसा हो गया हूँ कि जो कोई भी मनुष्य मेरे सम्पर्क में आता है उसे मुझसे ज्ञान, भक्ति और शक्ति मिलती है। मैं कुछ नहीं करता हूँ, परन्तु मुझे अनुभव होता है कि मुझसे स्वभावतः जीवन की किरणें चारों ओर निकल रही हैं और चारों ओर के मनुष्यों को उच्च पवित्र और चेतन बना रही हैं। इसमें मेरा कुछ नहीं है, मैंने तो प्रभु के आदित्य - (सूर्य) रूप की ठीक प्रकार से उपासना की है, अतः उनका ही सूर्यरूप मुझ द्वारा प्रकट होने लगा है। मैंने बुद्धि द्वारा सूर्य की उपासना की है। मनुष्य का बुद्धिस्थान (सिर) ही मनुष्य में द्युलोक (सूर्य का लोक) है। मैंने अपनी बुद्धि द्वारा सत्य का ही सब ओर से ग्रहण किया है और ग्रहण करके इसे धारण किया है। धारण करनेवाली वुद्धि का नाम ही 'मेधा' है। इस प्रकार मैंने मेधा को प्राप्त किया है, द्युलोक के साथ अपना सम्बन्ध जोड़कर द्युलोक को में ग्रहण किया है, इसलिए मैं सूर्य के समान हो गया हूँ। द्युलोक में स्थित प्रभु का रूप ऋतरूप है, सत्यरूप है। मैंने अपनी सब बुद्धियाँ, सब ज्ञान, उन सत्यस्वरूप पिता से ही ग्रहण किये हैं। मैंने इसका आग्रह किया है कि मैं सत्य को ही-केवल सत्य को ही अपनी बुद्धि में स्थान दूँगा। इस तरह मैंने के द्युरूप की सतत उपासना की है, ऋत की मेधा का परिग्रह किया है। इस सत्यबुद्धि के धारण करने के साथ-साथ मुझमें भक्ति और शक्ति भी आ गई है, मेरा मन और शरीर भी तेजस्वी हो गया है। पालक पिता के सब गुण मुझमें प्रकट हो गये हैं। मैं सूर्य हो गया हूँ। हे मुझे सूर्यसमान करनेवाले मेरे कारुणिक पितः! तुझ ऋत की मेधा को सब प्रकार से पकड़े हुए मैं तेरे चरणों में पड़ा हुआ हूँ। **साभारः- वैदिक विनय**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पनपती आपराधिक मानसिकता : चिन्ता और चिन्तन

हिंसक हो रहा है बचपन!! गलती किसकी?

एक साल पहले दो दोस्तों में स्कूल में डेस्क पर बैठने को लेकर झगड़ा हुआ था। उसी वक्त एक ने दूसरे को सबक सिखाने की ठानी। अब हंसमुख रहने वाला 14 साल का किशोर सेना से सेवानिवृत्त अपने दादा की लाइसेंसी डोगा बंदूक लेकर बाइक पर सवार होकर गांव सातरोड खुर्द पहुंचा और अपने डेस्क के विवाद का बदला लेते हुए सहपाठी को गोली मार दी। पता चलने पर घायल लड़के की मां और पिता मौके पर पहुंचे और बेटे को अस्पताल लेकर पहुंचे, उस समय तक उसकी मौत हो चुकी थी। यह घटना हिसार के सातरोड खुर्द के रेलवे स्टेशन के सामने की है।

15 साल का अंकुश सोनी अक्सर पूरे दिन मोबाइल पर गेम खेला करता था, जिससे परिवार वाले काफी परेशान रहते थे। मोबाइल पर गेम न खेलने की अक्सर बात किया करते थे, लेकिन अंकुश परिवार वालों की बात नहीं मानता था। एक दिन मां को अपने इस लाडले बेटे को डांटना महंगा पड़ गया। बेटे ने बड़ा कदम उठा लिया। बच्चा किचन शेड में फांसी पर लटका हुआ मिला। मामला छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर का है।

थोड़े समय पहले ऑनलाइन गेम पबजी की लत के शिकार 16 साल के एक बच्चे ने गेम खेलने से रोकने पर अपनी मां को गोली मारकर हत्या कर दी थी। घटना लखनऊ के पीजीआई पुलिस थाने के तहत यमुनापुरम कॉलोनी की है।

ऐसी कई सारी खबरें आजकल न्यूज़ पोर्टल पर आपको पढ़ने-सुनने को मिल जाएंगी। लेकिन देश-राजनीति, मीडिया, सोशल मीडिया में क्या चल रहा है, इन सब के बीच हम भूल जाते हैं कि हमारे बच्चों के दिमाग में क्या चल रहा है। वहां हिंसा जमा हो रही है या अश्लीलता?

सब जानते हैं कि बचपन वह समय है जब एक बच्चा सबसे ज्यादा सीखता है और अपने अनुभवों को गहराई से महसूस करता है। बचपन में सिखाई गई बातें और बचपन के अनुभव बच्चों के व्यवहार और सोच को गहराई से प्रभावित करते हैं। एक वेबसाइट है पैनल इंफॉर्म इंटरनेशनल, यह संस्था नाबालिग अपराध वृत्ति पर शोध करती है। इनके शोध बताते हैं कि पारिवारिक समस्याएं, माता-पिता की लापरवाही और गलत संगत में पड़ने जैसी स्थितियां बच्चों को अपराध की ओर धकेल सकती हैं। उनके कोमल मन में क्रूरता का बीज उपज सकता है।

अगर कम उम्र के कुछ बच्चे भी मामूली बात पर हिंसक होने लगें, यहां तक कि जानलेवा हमला और हत्या तक करने लगें, तो इसे गंभीर चेतावनी के तौर पर देखा जाना चाहिए। पिछले दिनों दिल्ली के मैदानगढ़ी इलाके में जिस तरह बारहवीं कक्षा के एक छात्र को दो नाबालिगों ने महज मोबाइल छीनने का विरोध करने पर चाकू से मार डाला, उसे सिर्फ इक्का-दुक्का घटना मानकर नजरअंदाज करना शायद ठीक नहीं होगा। आरोपी नाबालिगों ने छात्र का गला रेत दिया और उसकी मौत के बाद तेजाब से उसका चेहरा भी जलाने की कोशिश की। यह किसी पेशेवर अपराधी की तरह की हरकत है, जिसमें हत्या और फिर पकड़े जाने से बचने के लिए सबूत मिटाने का प्रयास किया गया। अगर पुलिस ने उस इलाके के सीसीटीवी फुटेज को नहीं खंगाला होता, तो शायद आरोपियों को पकड़ना भी मुश्किल होता।

आज सवाल ये है कि जिस उम्र में बच्चे कोमल भावनाओं के दौर से गुजर रहे होते हैं, उसमें कुछ के भीतर इस तरह की हिंसक प्रवृत्ति कैसे घर कर जाती है! थोड़े दिन पहले दिल्ली के एक स्कूल में तीन छात्रों ने मिलकर एक शिक्षक पर चाकू से जानलेवा हमला कर दिया। कारण बस इतना था कि शिक्षक ने छात्रों को स्कूल की

वर्दी को लेकर डांटा था। नाबालिगों का आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त होना कोई नई बात नहीं है, मगर पिछले कुछ समय से ऐसी घटनाएं देखी जा रही हैं, जिनमें मामूली बात पर हुए विवाद पर किसी किशोर ने खुद या अपने साथियों के साथ मिलकर अन्य साथी बच्चे को बुरी तरह मारा-पीटा या फिर उसकी हत्या कर दी। कोई समाज अगर दिनोंदिन सभ्य और अहिंसक होने की ओर बढ़ता है, तो उसकी नई पीढ़ी भी यही रास्ता चुनती है।

मगर आज ऐसे हालात क्यों सामने आ रहे हैं, जिनमें किशोरों के बीच हिंसक प्रवृत्ति बढ़ती देखी जा रही है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वक्त के साथ होने वाले बदलाव से संतुलन बिठाना जरूरी होता है, लेकिन बदलाव की रफ्तार और उसका दायरा क्या ऐसा हो सकता है कि उससे संतुलन बिठाने के क्रम में समाज का सबसे नाजुक हिस्सा ही असंतुलित होने लगे? किशोरावस्था उम्र का एक जटिल पड़ाव होता है, जिससे गुजरते बच्चे कई तरह की उथल-पुथल का सामना कर रहे होते हैं। ऐसे में अगर समाज और सरकार के स्तर पर ऐसी व्यवस्था बनाने में कोताही की जाती है, तो उसका खमियाजा भावी पीढ़ियों को भुगतना पड़ता है।

आज के दौर में मीडिया और इंटरनेट का प्रभाव बच्चों के मन को विकृत कर रहा है। आप सोचते हैं कि हमारा बच्चा घर में रहता है। कहीं बाहर किसी आवारा टाइप बच्चों से दूर रहता है। पड़ोस में भी खेलने-कूदने नहीं जाता। आप इन सब से बचाकर अगर खुद को अच्छे माता-पिता समझ रहे हैं, तो ध्यान रखिए उसके हाथ में मोबाइल फोन है, जिसमें ना जाने कितनी एप्लीकेशन हैं, ओटीटी प्लेटफार्म हैं। उनमें हिंसक वीडियो, गेम्स, फिल्में और वेब सीरीज हैं, जो मन में आक्रामकता और कामुकता बड़े स्तर पर उत्पादन कर सकती हैं। कर भी रही हैं, वो अपने मनपसंद पात्र जैसा बनना चाहता है, उसका मनपसंद पात्र हिंसक भी हो सकता है और कामुक भी। दूसरे, बच्चे के दिमाग को विकसित होते समय घर और परिवार का बड़ा रोल होता है। पिछले दिनों कुम्भ मेले में एक आईआईटी बाबा को लेकर मीडिया में बड़ी चर्चा रही। बताया गया बाबा अभय सिंह आईआईटी-बॉम्बे के पूर्व छात्र हैं और एयरोस्पेस इंजीनियर भी रह चुके हैं। लेकिन जब छोटे थे, तो घर में माता-पिता के बीच कलह रहती थी, जिसका उसके दिमाग पर ऐसा असर हुआ कि सांसारिक दुनिया को छोड़कर बाबाओं की दुनिया में आ गए। लेकिन सब बाबा तो नहीं बनते, कुछ क्रूरतापूर्वक काम में भी संलिप्त हो जा रहे हैं, यानी जिन घरों में माता-पिता के बीच झगड़े होते हैं या बच्चों के साथ मारपीट की जाती है, वहाँ बच्चे भी हिंसा को सामान्य मानने लगते हैं।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

मानव निर्माण के इस सेवा अभियान में संलग्न अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ पिछले 42 वर्षों से गर्मी की छुट्टियों में वैचारिक क्रांति शिविरों के माध्यम से वनवासी अंचलों से युवक-युवतियों को दिल्ली में आमंत्रित करके, उनके भोजन, आवास, भ्रमण सहित संपूर्ण व्यवस्था के साथ उन्हें वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों, सहित संध्या, हवन, भजन, प्रार्थना, उत्तम दिनचर्या आदि की संपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। जिसके परिणाम स्वरूप फिर यही बच्चे भारत के वनवासी क्षेत्रों में दूसरे बच्चों को संस्कारित करते हैं और इस तरह से एक ऐसी वैचारिक क्रांति की लहर सी चल रही है। जिससे समाज का हर वर्ग लाभान्वित होकर देश का सभ्य नागरिक और राष्ट्रभक्त बन रहा है।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष यह वैचारिक क्रांति एवं बालवाड़ी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर 21 मई से 1 जून 2025 तक अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें भारत के 9 वनवासी राज्यों से सैकड़ों आर्य युवक-युवतियों ने भाग लिया, 23 मई को शिविर का विधिवत उद्घाटन हुआ, जिसमें आर्य समाज के शीर्ष नेतृत्व सहित अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा, वेद प्रचार मंडलों, आर्य समाजों के अधिकारियों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

इस शिविर में सहभागी सभी आर्य कार्यकर्ता बच्चों की आदर्श दिनचर्या, योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, संध्या, हवन, बौद्धिक, शास्त्र परिचय, राष्ट्र भक्ति, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा के साथ भजन, संगीत आदि की कक्षाएं नियमित रूप से चलाईं गई। इसके लिए आर्य समाज के सुयोग्य विद्वान श्री जीववर्धन शास्त्री जी, श्री शरद जी, श्री संतोष शास्त्री जी, इत्यादि महानुभावों ने पूर्ण पुरुषार्थ कर महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिविर की संपूर्ण व्यवस्थाएं दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी और दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी के निर्देशन में सुचारू रूप से गतिशील रही, जेबीएस ग्रुप के चैयरमेन, गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति एवं दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का मार्गदर्शन भी लगातार मिलता रहा। इसके अतिरिक्त आर्य समाज रानी बाग के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों का हर प्रकार से सहयोग करना प्रशंसनीय है। बच्चों को दिल्ली के ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण भी कराया गया, सभी बच्चे शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वयं को गौरवान्वित और लाभान्वित अनुभव कर रहे थे, सभी के मन सुमन और चेहरे प्रेम प्रसन्नता से चमक रहे थे।

31 मई 2025 को सायं 5 से अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर, जनपथ, नई दिल्ली के प्रांगण में इस रचनात्मक शिविर का भव्य समापन समारोह संपन्न हुआ। जिसमें गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन, श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, मुख्य अतिथि, गुजरात के माननीय राज्यपाल, आचार्य देवव्रत जी, सभा प्रधान, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री अनिल गुप्ता, संघ कार्यवाह, दिल्ली, श्री बिजेंद्र गुप्ता जी, अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा, श्री आशीष सूद शिक्षा मंत्री, दिल्ली-सरकार, श्री राजकुमार गुप्ता जी, आर्य प्रतिभा विकास केंद्र, श्री सुरेंद्र रैली जी, श्रीमती राज सचदेवा जी, श्री योगराज आरोड़ा जी, श्री सतीश चड्ढा जी, आर्य समाजों, वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी महानुभावों ने आर्य वनवासी शिविरार्थी, कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री, ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों के उच्चारण के साथ दीप प्रज्ज्वलन से प्रारंभ हुआ। वनवासी आर्य कार्यकर्ताओं के रूप में 10 दिन तक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवक-युवतियों ने सबसे आगे होंगे हिंदुस्तानी गीत पर सांस्कृतिक नृत्य, और रानी बाग आर्य गुरुकुलों के बच्चों ने प्रेरक प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया, इस क्रम में शिवरार्थी बच्चों के 10 दिनों की कक्षाओं में प्रशिक्षण, संध्या, हवन, कार्य कौशल और विभिन्न क्रियाकलापों पर आधारित वीडियो प्रसारित की गई। उपस्थित अतिथियों में आचार्य देवव्रत जी, श्री बिजेंद्र गुप्ता जी, अनिल गुप्ता जी, योगराज आरोड़ा जी, श्री आशीष सूद जी, श्री रवि हंस जी इत्यादि महानुभावों का अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी एवं अन्य अधिकारियों द्वारा पीत वस्त्र तथा असम की बड़ी कैप पहनाकर स्वागत सम्मान किया गया। शिविर में प्रशिक्षण देने वाले आचार्य गणों को भी संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।

शिवरार्थियों ने शिविर के अपने अनुभव बांटते हुए बताया कि किस प्रकार उन्हें 10 दिनों के प्रशिक्षण से लाभ प्राप्त हुआ है। भामल मध्य प्रदेश से पधारी भूमिका राठौर ने शिविर के 10 दिन के अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि जब मैं शिविर में आई तब मुझे मंत्र उच्चारण या संध्या, हवन आदि के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। लेकिन यहां पर सुयोग्य आचार्यों के निर्देशन में संध्या क्यों करते हैं, संध्या क्या है और संध्या से क्या लाभ होते हैं, ऋषि मुनियों के तप, त्याग के विषय में तथा महर्षि दयानंद

– जारी पृष्ठ 4 एवं 7 पर

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

जब बौद्ध धर्म अपनाकर सम्राट अशोक भूल गया था राजधर्म

गतांक से आगे -

धर्म और धार्मिक नेताओं का राजाओं के साथ आपसी गठजोड़ मजबूत होता गया। जो ईसाई बहुल राज्य थे वहां चर्चों का और पादरियों का बोलबाला हो गया। जहां मुस्लिम राज्य था वहां मुस्लिम उलेमाओं का बोलबाला होता गया।

हम भारत के परिप्रेक्ष्य में चर्चा करेंगे तो पाएंगे कि महाभारत काल के पश्चात् भारत में अनेक विचारधाराओं ने जन्म लिया, राज्य सत्ताएं निरन्तर कमजोर होती चली गईं। सैकड़ों वर्षों से जो विदेशी हमारे गौरवशाली वैभव को देख चुके थे, हमारी विशाल सम्पदा की कीमत जानते थे, हमारी भीतर की कमजोरियों को देखकर, धार्मिक व राजनीतिक रूप से हमें कमजोर देखकर, सामाजिक रूप से हमें अनेक जातियों में बंटा हुआ देखकर, हमारी धनसंपदा को अपने अधिकार में रखने के प्रति आकर्षित हुए और प्रपंच रचने शुरू कर दिए। हालांकि प्रशासनिक और सामाजिक तौर पर हम काफी कमजोर हो चुके थे, पर धार्मिक आस्थाएं चाहे अंधविश्वास के चलते अभी मजबूत जड़े जमाए हुए थीं। गांव-गांव में पाठशाला थी, उनमें अब कुछ एक वर्ग विशेष के बच्चे ही पढ़ते थे। वेदों को पढ़ने-पढ़ाने का क्रम जारी था, एक-एक गांव एक-एक वेद को समर्पित था। दुर्भाग्य यह था कि वेद तो कंठस्थ थे पर उनके अर्थों का सत्यानाश हो चुका था। जैसे गोमेध यज्ञ का वास्तविक अर्थ था गौ और कृषि आदि की वृद्धि करना—उसका अनर्थ करके गोमेध का अर्थ यज्ञ में गौ की बलि चढ़ाना या आहुति देना प्रचलित कर दिया गया।

अश्वमेध यज्ञ का वास्तविक अर्थ अपने क्षत्रिय धर्म की उन्नति और राज्य का विस्तार करना था। उसका अनर्थ करके यज्ञ में घोड़े की आहुति देना कर दिया गया। ऐसे अनेक विनाशकारी अर्थों से लोगों की श्रद्धा, विश्वास, आस्था वेदों के प्रति कम होती गई।

इस कार्य में पुराणों आदि का भी बहुत बड़ा योगदान रहा। ये बताना ठीक-ठीक तो बहुत मुश्किल है कि पुराण कब लिखे गए और ये भी बताना अत्यन्त कठिन है कि क्या ये मूल रूप में भी ऐसे ही थे या इनकी भी व्याख्या करते समय भूल हुई, हानि हुई। पर ये जरूर कहा जा सकता है कि पुराणों को हिन्दू धर्म के धर्मग्रन्थ बताकर जरूर हिन्दू समाज की बहुत हानि हुई। किसने मिलावट की, कह नहीं सकते किन्तु जो आज जो उपलब्ध हैं उनको देखकर कोई इन पर कैसे धर्मग्रन्थ के रूप में विश्वास करेगा ?

अनेक ऐसी मान्यताएं धर्म के नाम पर प्रचलित कर दी गई जैसे 'समुद्र पार करने से धर्म नष्ट हो जाता है' फलस्वरूप हमारा विदेश में आना-जाना कम होता गया और हम व्यापार में कमजोर होते चले गए। इस कारण अन्य देशों के लोग व्यापारी के रूप में भारत आने लगे। सबसे पहले अरब व्यापारी केरल के कालीकट तट पर आए, व्यापार शुरू किया, साथ ही अपने साथ वहां का मुस्लिम धर्म भी लाए। आहिस्ता-आहिस्ता उन्होंने यहां खेती शुरू की, यहां की छोटी जातियां जो ऊंच-नीच, छुआ-छूत का शिकार हो चुकी थी उनको मुस्लिम बनाया, जनसंख्या बढ़ानी शुरु कर दी।

इसी समय भारत में बौद्धमत तेजी से फैल रहा था। बौद्ध धर्म का भारत में प्रचार-प्रसार बढ़ने की जो सबसे बड़ी हानि हुई उनमें से एक है सम्राट अशोक का बौद्ध मत ग्रहण कर लेना। अहिंसा वेदों के ज्ञान का भाग है किन्तु अधूरा ज्ञान हमेशा हानि पहुंचाता है। यहां भी लगभग ऐसा ही हुआ। सम्राट अशोक बौद्ध धर्म अपनाकर अपना राजधर्म भूल गया। उसने अपना विस्तार छोड़ दिया, युद्ध आदि छोड़ दिए, सैनिकों की क्षमताएं कम होने लगी, हथियारों में जंग लगने लगे। विरोधियों को हमारे देश में आने के रास्ते आसान बनते गए। ऐसे में खुद के ही क्षत्रप भी बागी हो गए। अशोक तो अपने शासनकाल में राजा बना रहा पर उसकी मृत्यु के 40-45 वर्षों बाद शानदार मौर्य साम्राज्य ताश के पत्तों की भांति ढह गया जिसके लिए अशोक की गलत व्याख्या वाली 'अहिंसा' की नीति को ही कारण मानना होगा।

- क्रमशः

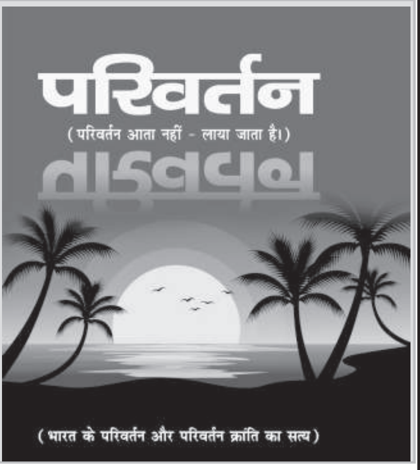

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

पृष्ठ 3 का शेष

वैचारिक क्रान्ति शिविर के समापन समारोह में अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान

सरस्वती जी के प्रेरक जीवन को मैंने जाना, जड़ और चेतन देवताओं के विषय में विस्तार से मुझे पता चला, चार वेद और वेदों में 20000 से अधिक मंत्र है और ये सारे मंत्र मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाते हैं, इस सब की जानकारी मुझे प्राप्त हुई। पंच महायज्ञ प्रत्येक मनुष्य को क्यों करनी चाहिए, इसका भी मुझे विस्तार से ज्ञान प्राप्त हुआ और अब मैं प्रतिदिन अपने घर जाकर भी संध्या अवश्य करूंगी और आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रयास करूंगी।

इस क्रम में झारखंड से आई से आई चंपा कुमारी जी ने आर्य समाज के अधिकारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि आर्य समाज क्या है, आर्य समाज क्या करता है, आर्य समाज किस तरह से मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के लिए संकल्पित है, यह सब बात मुझे यहां पर जाकर पता चला, मैं आर्य समाज के सिद्धांतों से, मान्यताओं और परंपराओं से परिचित हुई। यहां पर मुझे घर जैसा वातावरण प्राप्त हुआ, अनुशासन, व्यवस्था और एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त हुई। इसके लिए मैं सभी के प्रति आभारी हूं और अपने जीवन में 10 दिनों की सीखी हुई इस सारी व्यवस्था को अवश्य-अपनाऊंगी और प्रचार भी करूंगी। उपस्थित जन समूह और अतिथियों ने सभी शिवरर्थियों को शुभकामनाएं प्रदान की।

आचार्य देवव्रत जी
राज्यपाल, गुजरात

श्री विजेन्द्र गुप्ता जी
अध्यक्ष, दिल्ली विधान सभा

श्री आशीष सूद जी
शिक्षामन्त्री, दिल्ली

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी
प्रधान, दयानन्द सेवाश्रम संघ

- निरन्तर पृष्ठ 7 पर

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पुष्पांजलि एन्कलेव दिल्ली के प्रांगण में

आर्य वीर चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

विस्तृत समाचार एवं चित्रमय झांकी आगामी अंकों में

समस्त आर्य समाजों, प्रांतीय सभाओं, गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्य जनों एवं समस्त पाठकों से अनुरोध है कि आर्थिक रूप से कमजोर, अभाव ग्रस्त, जरुरतमंद परिवारों के मेधावी छात्रों को 12वीं के उपरान्त उच्च शिक्षा हेतु सहयोग करें और आर्य प्रगति छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए प्रेरित करके अधिकाधिक संख्या में ऑनलाइन फॉर्म भरवाएं

ओ३म्

आर्य समाज की पहल

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2025

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- परीक्षा ऑनलाइन बहुकल्पिक प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान, गणित और साधारण विज्ञान पर आधारित होगा।

आवेदन आरंभ की तिथि : 01-04-2025
आवदेन की अन्तिम तिथि : 30-06-2025

आवेदन करने के लिए वेबसाइट **www.aryapragati.com**

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

9311721172

E-mail: dss.pratibha@gmail.com

साप्ताहिक स्वाध्याय

जीवन का अन्तिम दृश्य

गतांक से आगे-

इस खण्ड को समाप्त करने से पूर्व आवश्यक प्रतीत होता है कि महर्षि दयानन्द देश को आर्यसमाज के रूप में जो संगठन दे गए थे, उस पर थोड़ा-सा विचार करें। महर्षि दयानन्द अपने पीछे आर्यसमाजों को, अपने ग्रन्थों को, अपने चरित्र को और कई शिष्यों को छोड़ गए थे। इनमें से हरेक उनका स्मारक है। परन्तु जिस स्मारक की स्थिरता सबसे अधिक है, वह आर्यसमाज है। आर्यसमाज महर्षि दयानन्द का स्मारक ही नहीं, वह महर्षि का प्रतिनिधि भी है। ग्रन्थों की, सिद्धान्तों की, संस्थाओं की और वस्तुत: वेदों की रक्षा का बोझ आर्यसमाज पर है। महर्षि दयानन्द ने अपने पीछे अपना प्रतिनिधि आर्यसमाज को बनाया है। इस परिच्छेद में देखना है कि वह प्रतिनिधि बनने के योग्य भी था या नहीं?

आर्यसमाज के संगठन के सम्बन्ध में स्वयं आर्यसमाजियों में मतभेद हैं। अनेक विद्वान् आर्य पुरुषों ने भी वर्तमान संगठन (Constitution) से असन्तोष प्रकट किया है। महर्षि दयानन्द के किसी कार्य से असन्तोष प्रकट करना उचित न समझकर उन महानुभावों ने आर्यसमाज के वर्तमान नियमों तथा उपनियमों के लिए किसी ऐसे सज्जन को दोषी ठहरा दिया है, जिसे वे बुरा समझते थे। यहां तक कि आर्य समाज के एक इतिहास लेखक ने तो आर्यसमाज के वर्तमान संगठन को ही बहुत से वर्तमान दु:खों का मूल मान लिया है।

यह मानना पड़ेगा कि आर्यसमाज का वर्तमान संगठन धर्मिक संसार में नया है।

इससे पूर्व किसी धर्मिक समाज में प्रजासत्तात्मक शासन प्रणाली का ऐसी पूर्णता से प्रयोग नहीं किया गया। प्राय: सब मत किसी अलौकिक प्रभाव के नीचे रहे हैं। रोम के कैथोलिक ईसाई रोम के पोप को अपने धर्म का गुरु मानते हैं। इस्लाम की नजर पहले लीफा की ओर लगी रहती थी, अब मक्के की ओर लगी हुई है। बौद्ध भिक्षुकों के चुनाव में किसी प्रजामत का हाथ नहीं है। प्रोटेस्टैण्ट-ईसाई चर्च यद्यपि प्राय: राजकीय शक्ति पर भरोसा रखता है, तो भी यह मानना पड़ेगा कि प्रोटेस्टैण्ट चर्च के मुख्य पुरुषों के चुनाव में आम ईसाइयों का कोई हाथ नहीं होता। धर्म के विषय में लोकमत का प्रतिनिधित्व महर्षि दयानन्द से पूर्व केवल एक जगह स्वीकार किया गया था। हजरत मुहम्मद की मृत्यु के पीछे जो लीफा हुए, वे सर्वसाधरण की ओर से चुने गए। परन्तु शीघ्र ही जो तलवार अब तक इस्लाम और अन्य मतों के झगड़े में सत्यासत्य निर्णय करने का अन्तिम साधन समझी जाती थी, वही इस्लाम की खिलाफत के अधिकारानधिकार के निर्णय के लिए भी अंतिम प्रमाण मान ली गई। हजरत अली और उमय्यद वंश की टक्कर में इस्लाम का प्रजासत्तात्मक रूप कुचल गया।

भारतवर्ष के लिए राजनीति में भी प्रजासत्तात्मकवाद नया था। अभी किसी स्थान पर उसका पूर्णतया प्रयोग नहीं हुआ था। ब्रिटिश सरकार बहुत संभल-संभल कर कहीं-कहीं प्रजामत को थोड़ा-बहुत स्वीकार कर रही थी। और तो और, स्वयं इंग्लैण्ड में भी पूरा प्रजासत्तात्मक शासन नहीं था। वहां का राजा प्रजा का चुना हुआ नहीं होता, आकस्मिक घटना का चुना हुआ होता है। राजा के घर में जो लड़का पैदा हो गया, वही बाद में राजगद्दी का अधिकारी बन जाता है। इसे महर्षि दयानन्द की बुद्धि का अद्भुत चमत्कार कहना चाहिए कि उन्होंने धर्म के क्षेत्र में उस सिद्धान्त का पूर्णता के साथ प्रयोग किया, जिसे अन्य धर्म तो क्या, राजनीति भी अपनाती हुई घबराती थी। मानते सब थे, परन्तु प्रयोग में नहीं ला सकते थे। समझा जाता था कि प्रजासत्तात्मक शासन को चलाने के लिए सदियों के शिक्षण की आवश्यकता है। भारतवासी तो क्या, उनसे अधिक शिक्षित लोग भी उसे काम में नहीं ला सकते थे। महर्षि दयानन्द ने उस सिद्धान्त को केवल भली प्रकार समझा ही नहीं, उसे व्यवहार योग्य बनाकर कार्यरूप में परिणत भी कर दिया और यह सब कुछ अंग्रेजी और पाश्चात्य शिक्षा से अनभिज्ञ होते हुए किया। यदि महर्षि की परोक्ष-दर्शिता में किसी को सन्देह हो तो केवल एक दृष्टान्त से उसका संशय दूर हो सकता है।

-क्रमश:

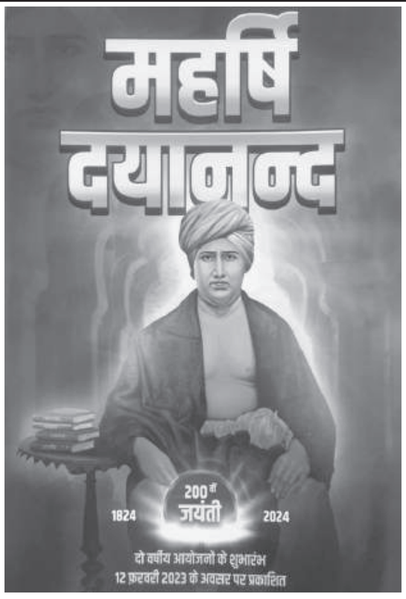

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Last scene of Life

He wrote in Lahore's 'Kohenoor' - 'It is a matter of great regret that Swami Dayanand Sahib, who was a great scholar of Sanskrit and a great lover of Vedas, died on 30th October 1883 at 7o'clock in the evening in Ajmer. Apart from this, he was a very pious and darvesh-like man. His followers used to consider him as a deity, and of course he deserves it. He did not consider the worship of anyone other than Nirankar as Jyoti Swaroop justified. We met Swami Dayanand Marhoom a lot, I always used to respect him a lot, because he was such a scholar and a good person that every religious person had to respect him. However, there were such persons, whose case is not in India at this time and it is necessary for every person to remember his death, that such a person like Benazir passed through them.

In the last days, Swamiji had many differences with the Theosophists, but on his death, the leaders of the Theosophical Society very kindly gave evidence of inner devotion, highlighting the sorrow. On the news of the death of Swami ji, Theosophist, the press of Theosophy, expressed the words of the heart in the following words – "A great soul has passed away from India. Muiya, departed from the world today. He was a fearless and zealous reformer. His forceful voice and zeal brought thousands of men of India out of the pit of during the last many years to come under the patriotic flag. He has gone. Today he went to heaven leaving India with separation.

Colonel Alcott, the founder of the Theosophical Society, wrote - Swamiji Maharaj was undoubtedly a great man and a great scholar of Sanskrit. He was the abode of a high degree of competence, determination and spiritual conviction. He was the guide of mankind. He was very well built, tall, very sweet natured and kind in his dealings with us. He has left a deep impact on our mind.

Swami ji had a lot of tension with the Christian people, because it was Dayanand who stopped the victory of Christianity in northern India. Heartfelt condolences were also published on behalf of Christians on the death. The news reached abroad. Famous Sanskrit scholar Prof. Max Müller wrote a note in 'Palmal Gazette'. In that letter, the professor accepted that Swamiji was a great scholar of Vedic literature and a famous reformer. Professor Saheb wrote that wherever there was a debate, Swami Dayanand won. All the newspapers of the country described the death of the sage as the ultimate misfortune of the country. In this way, the sage Dayanand, who is gratefully remembered by the country, left the unfortunate land of India and travelled to the other world on the night of Diwali.

Before ending this volume, it seems necessary to think a little about the organization that Rishi Dayanand had given to the country in the form of Aryasamaj. Rishi Dayanand had left behind Aryasamaj, his books, his character and many disciples. Each of these is his monument. But the memorial which has maximum stability is Arya Samaj. Aryasamaj is not only the memorial of Rishi Dayanand, it is also the representative of the sage. The burden of protecting the texts, principles, institutions and in fact the Vedas is on the Arya Samaj. Rishi Dayanand has made Arya samaj his representative behind him. It is to be seen in this passage whether he was even eligible to become a representative or not.

Regarding the organization of Aryasamaj, there are differences among the Aryasamaj itself. Many learned Arya men have also expressed their dissatisfaction with the present organization (constitution). Not considering it proper to express dissatisfaction with any work of Rishi Dayanand, those great people have blamed some gentleman, whom they considered bad, for the present rules and regulations of Aryasamaj.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

आर्य युवा संस्कार शिविर, पंचकुला	आर्य युवती संस्कार शिविर, पंचकुला
(10 से 17 वर्ष के बच्चों हेतु)	(10 से 17 वर्ष की बालिकाओं हेतु)
5 से 12 जून, 2025	11 से 17 जून, 2025
स्थान सीमित (30 सीट)	स्थान सीमित (35 सीट मात्र)
अभिभावक स्पेशल शिविर	अभिभावक स्पेशल शिविर
9-10 जून, 2025	15-16 जून, 2025

दोनों संस्कार शिविरों में भाग लेने अथवा शिविर सम्बंधी अधिक जानकारी के के लिए 7428894033 पर सम्पर्क करें। - सार्वदेशिक विश्वमार्यम ट्रस्ट

पृष्ठ 4 का शेष

इस अवसर पर संघ के कार्यवाह श्री अनिल गुप्ता जी ने वनवासी क्षेत्रों की प्राचीन स्थिति और वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ ऋषि मुनियों की परंपरा को उन सुदूर क्षेत्रों में प्रचारित कर रहा है, भाषा और भोजन में भी विविधता है, महर्षि दयानंद की प्रेरणा से कल्याण कारी योजनाएं सफलता पूर्वक चलाई जा रही हैं। श्री बिजेंद्र गुप्ता जी ने आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि इन बच्चों की प्रस्तुति देखकर ऐसा लगता है कि इन 10 दिनों में जो कुछ इन्होंने सीखा है वह इन्हें जीवन भर कल्याण की राह पर अग्रसर करता रहेगा। श्री आशीष सूद, शिक्षामंत्री, दिल्ली सरकार ने भी बच्चों को आशीर्वाद देते हुए शिक्षा के साथ संस्कारों के महत्व की सराहना की। आपने कहा कि यहां स्कूल चलाना तो सरल है लेकिन वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा के साथ संस्कारों को देना बहुत बड़ी बात है, इसके लिए आर्य समाज को बधाई ।

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने अपने विशेष उदबोधन में कहा कि आज का दिन कितना विशेष है कि जब हम सब यहां पर उपस्थित होकर शिवरार्थियों द्वारा सीखी हुई विचारधारा, अनुशासन, स्वास्थ्य और टीम भावना की एक झलक हमने देखी, अधिकांश इन पूर्वी प्रदेशों के बालकों को आशीर्वाद देने हेतु ऋषि भक्त आचार्य देवव्रत जी गुजरात से यहां पधारे हैं। आचार्य जी एवं दिल्ली सरकार के प्रतिनिधियों का यहां आना अपने आप में एक गौरव का विषय है और मैं अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के अध्यक्ष होने के नाते सभी का विशेष हार्दिक स्वागत करता हूं।

सज्जनों इस शिविर को क्रांति शिविर का नाम बड़ा सोच समझ कर दिया गया है। क्रांति अर्थात परिवर्तन और परिवर्तन भी सकारात्मक बदलाव के लिए, इसलिए ठीक ही तो है जो परिवर्तन नियम, सिद्धांत, अच्छी परंपराओं से जोड़े, जो समाज को सशक्त और सुखी बनाने का कार्य करे उसे लगातार अपनाना ही चाहिए। किंतु जो विकार, आडंबर, पाखंड, जातिवाद ऊंच नीच समय के साथ-साथ खरपतवार की तरह उग जाते हैं उन्हें नष्ट करना ही क्रांति है। हम सब देख रहे हैं कि एक समय विश्व गुरु और सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत लगातार 1000 वर्षों की गुलामी के कारण अलगावाद, आपसी फूट, सांप्रदायिकता और आज आतंकवाद से जूझ रहा है, कहीं प्रलोभन द्वारा मतांतरण भी किया जा रहा है, हमारे देश के सीमावर्ती राज्यों में, पहाड़ों की तलहटियों में विशेष रूप से निशाना बनाया जा रहा है और विभाजनकारी शक्तियां वहां घुसपैठियों को बसा रही है, चुनौतियां बहुत है अंदर की और बाहर की दोनों तरफ की चुनौतियों का हमें सामना करना है। यह तो हमारे पुण्य कर्मों का प्रताप है जो भारत की बागडोर एक ऐसे दिव्य पुरुष श्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों में है जिनके जीवन का हर क्षण राष्ट्र सेवा और भारत की यश कीर्ति और सौभाग्य को बढ़ाने के लिए समर्पित है, यह हमारा अहोभाग्य है कि हमें श्री मोदी जी के समकालीन समय में होने का हमें अवसर मिला है, अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा, आवास, भोजन और कौशल विकास के कार्यों को कर रहा है और मैं आप सबसे निवेदन करता हूं की राष्ट्र रक्षा के इस यज्ञ में सभी अपनी आहुति दें। अभी पिछले दिनों में मौसम भी अच्छा रहा, बच्चों ने जहां शिक्षा प्राप्त की वहीं भ्रमण का आनंद भी लिया। अब बच्चे अपने क्षेत्र में जाकर अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। सभी आयोजकों की जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है, घर में एक अतिथि आ जाए तो कितना कार्य करना पड़ता है लेकिन यहां 200 से ज्यादा बच्चे, उनका आना-जाना, खाना-पीना, रहना और शिक्षा प्रदान करना मैं उन्मुक्त हृदय से सभी की सराहना करता हूं। हमें ऋषि ऋण चुकाना है, आर्य राष्ट्र बनाना है गुरुकुल कांगड़ी का कुलाधिपति बनाने पर मुझे बहुत से लोगों ने शुभकामनाएं भेजी है, मैं सभी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं और ईश्वर से सामर्थ्य की कामना करता हूं। सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं बधाई

मुख्य अतिथि के रूप में माननीय आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल, गुजरात ने अपने उद्बोधन में 42वें वैचारिक क्रांति एवं बालवाड़ी प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में उपस्थित वनवासी क्षेत्रों से आए शिवरार्थियों को अपना आशीर्वाद और शुभकामनाएं देते हुए उपस्थित श्री विजेंद्र गुप्ता, श्री आशीष सूद , श्री सुरेंद्र कुमार आर्य, श्री राजकुमार, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री सुरेंद्र रैली, श्री सतीश चड्ढा, श्री योगराज अरोड़ा जी सभी को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आप सब बधाई के पात्र हैं। उन्होंने श्री विजेंद्र गुप्ता जी को विशेष रूप से बधाई देते हुए कहा कि दिल्ली विधानसभा में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का चित्र लगाने के लिए भी आपको बहुत-बहुत बधाई। यहां जो बेटे-बेटियां उपस्थित हैं, जहां हमारी संस्कृति पर कुठाराघात लगातार किया जाता रहा है, हमारी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया जाता है, वहां 50 वर्ष पहले आर्य समाज ने बीड़ा उठाया था, शिक्षा का प्रचार, सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण और स्वास्थ्य को लेकर आर्य समाज लगातार उन राज्यों में अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के माध्यम से वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को प्रचारित कर रहा है। कहा जाता है कि वादल अगर समुद्र में बरसे और मरुस्थल बूंद-बूंद को तरसे, तो उस वर्षा का कोई लाभ नहीं है, आर्य समाज द्वारा वैचारिक क्रांति शिविर, वेद का प्रचार-प्रसार और आर्य वीर दल के शिविर जो लगाए जा रहे हैं, वास्तव में यह वैदिक संस्कृति को बचाने के लिए अत्यंत उपयोगी हैं, अगर अपनी संस्कृति को बचाना है तो इन शिविरों को और अधिक मात्रा में लगाने की आवश्यकता है। आचार्य जी ने अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ से यह आह्वान किया कि आगामी वैचारिक क्रांति शिविर गुरुकुल कुरुक्षेत्र में लगाएं और 1000 बच्चों की संपूर्ण व्यवस्था वहां की जाएगी, आपने बताया कि कुरुक्षेत्र गुरुकुल में भी शिविर का आयोजन किया गया है और वहां पर बहुत बड़े स्तर पर कन्याओं को, युवाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा, अक्टूबर में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए भी तैयारी करने के लिए आपने आर्यजनों से आह्वान किया।

श्री जोगेन्द्र खटटर जी महामंत्री ने सभी कार्यकर्त्ताओं, अधिकारियों, उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद किया और सभी बच्चों को शुभकामनाएं दी। मंच का संचालन श्री जीववर्धन शास्त्री जी ने कुशलता पूर्वक किया। *- संयोजक*

पृष्ठ 2 का शेष

एक ओर, बहुत सारे परिवारों को रोजमर्रा की जरूरतें पूरा करने के लिए जद्दोजहद करना पड़ता है और ऐसे में कुछ बच्चे अभाव और उपेक्षा का शिकार होकर गलत रास्ता चुन लेते हैं। वहीं आधुनिक तकनीकी के नए-नए यंत्रों, गैरजरूरी और विकृति पैदा करने वाली सामग्री के बीच पलते कुछ किशोर असंतुलन का शिकार होकर अपराध की ओर भी बढ़ जाते हैं।

बचपन को मासूमियत, खुशियों और निश्छलता का प्रतीक माना जाता है। लेकिन आज के दौर में बच्चों का बचपन हिंसा की भेंट चढ़ता जा रहा है। जब बच्चे को घर में भावनात्मक सुरक्षा नहीं मिलती, तो वह इसे बाहर ढूंढने की कोशिश करता है। गलत संगत या नकारात्मक माहौल उन्हें अपराध की ओर ले जा सकता है। ऐसे में बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क के अनुकूल माहौल निर्मित करने की जरूरत है, ताकि भावी पीढ़ियों को इंसानियत, सभ्यता और संवेदनशीलता की सीख मिल सके। अन्यथा अभाव या फिर सुविधाओं की अतिशयता की वजह से दिशाहीन हुए बच्चे समाज या देश के लिए एक गंभीर समस्या बनेंगे।

- सम्पादक

प्रवेश सूचना

निराश्रित व निम्न आय वर्ग के बालक-बालिकाओं हेतु शिक्षा, छात्रावास सुविधा व पालन-पोषण की नि:शुल्क उत्तम व्यवस्था

नर्सरी से 12वीं कक्षा	कक्षा 6वीं से 12वीं
आर्य बालगृह, आर्य कन्या सदन एवं रानी दत्ता आर्य विद्यालय	**छात्रावास एवं चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर**
	चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट
वीरेश प्रताप परिसर, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली	देसराज परिसर, सी-ब्लाक, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली

उपरोक्त सभी विद्यालयों एवं छात्रावासों में अपने क्षेत्र के किसी भी निराश्रित अथवा निम्न आय वर्ग के बालक-बालिकाओं का नर्सरी से 12वीं तक किसी भी कक्षा में नि:शुल्क प्रवेश कराने के लिए सम्पर्क करें

आर्य बाल गृह 9899019472 | आर्य कन्या सदन 9899019469
राजकुमार सिंह 9818785742

चन्द्रवती चौधरी स्मारक
छात्रावास 899019472 | ट्रस्ट 9899019469
विद्या:9871631799 मीरा: 9953891279

-: संचालक एवं निवेदक:-
नितिन्जय चौधरी एवं डॉ. संगीता चौधरी

सार्वदेशिक आर्य वीर दल
राष्ट्रीय शिविर

1 जून से 15 जून, 2025
स्थान : गुरुकुल विश्वभारती, भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक (हरियाणा)
-: दीक्षान्त एवं समापन :-
रविवार 15 जून - सायं 4 बजे से
सम्पर्क करें- ***सत्यवीर आर्य***
प्रधान संचालक, 9414789461

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

16 से 25 जून, 2025
स्थान : श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)
सम्पर्क करें- ***सुश्री नर्मदा आर्या***
8221881203

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज तिलक नगर, नई दिल्ली के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो समस्त संस्कार तथा समाज के दैनिक और साप्ताहिक यज्ञ निपुणता के साथ सम्पन्न करा सके।
सम्पर्क करें - **रणवीर दुआ, प्रधान**
(9811683560)

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
सोमवार 2 जून, 2025 से रविवार 8 जून, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 5-6-7/06/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 जून, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के ऐतिहासिक अवसर पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष विशेषांक का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं सम्मापित पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर साप्ताहिक आर्य सन्देश के विशेषांक **"150वां आर्य समाज स्थापना वर्ष"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें महर्षिकृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ, महषि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, सेवा कार्य, उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास, आर्य समाज द्वारा किए गए विभिन्न सफल आंदोलन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि विषयों पर शोधपरक लेख, कविताएं, रचनाएं, प्रेरक प्रसंग एवं संस्मरण आदि प्रकाशित किए जाएंगे।

अत: समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों, भजनोपदेशकों एवं कवि महानुभावों से निवेदन है कि उपरोक्त विषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित लेख एवं रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, विद्यालयों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और उद्योगपति परिवारों से सहयोग रूप में विज्ञापन भी सादर आमन्त्रित किए जाते हैं।

विशेषांक का आकार 23x36x8 (A4 Size) होगा एवं विज्ञापन दर निम्न प्रकार हैं -

विज्ञापन का आकार	विज्ञापन दर (रंगीन)	विज्ञापन दर (श्याम-श्वेत)
पूरा पृष्ठ	10000/- रुपये	7500/- रुपये
आधा पृष्ठ	5000/- रुपये	4000/- रुपये

इसके साथ ही **कवर पृष्ठ विज्ञापन - अन्तिम पृष्ठ हेतु** 51000/- रुपये एवं **कवर पृष्ठ 2 एवं 3 हेतु 31000/- रुपये** की की सहयोग राशि निर्धारित की गई है।

कृपया अपना विज्ञापन सहयोग एवं प्रकाशनार्थ सामग्री 'आर्य सन्देश साप्ताहिक' के नाम 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें या **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। - ***सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं

- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹ 80, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 60
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120, प्रचारार्थ मूल्य ₹80
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80, प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200, प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100, प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250, प्रचारार्थ मूल्य ₹160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300, प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह